[This question paper contains 4 printed pages.]

आपका अनुक्रमांक.....

H

Sr. No. of Question Paper : 4898

Unique Paper Code : 2052202401

Name of the Paper : Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi – DSC**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित गद्यांशो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) किसी को कोई स्थान बहुत प्रिय हो जाता है और वह हानि और कष्ट उठाकर भी वहाँ से नहीं जाना चाहता। हम कह सकते हैं कि उसे उस स्थान का पूरा लोभ है। जन्म-भूमि का प्रेम, स्वदेश-प्रेम यदि वास्तव में अंत:करण का कोई भाव है तो स्थान के लोभ के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। इस लोभ के लक्षणों से शून्य देश-प्रेम कोरी बकवाद या फैशन के लिए गढ़ा हुआ शब्द है।

P.T.O.

अथवा

मुझे ऐसा लगता है कि वसन्त भागता - भागता चलता है। देश में नहीं, काल में। किसी का वसन्त पन्द्रह दिन का है तो किसी का नौ महीने का। मौजी है अमरूद। बारह महीने इसका वसन्त ही वसन्त है। हिन्दी भवन के सामने गंध राज पुष्पों की पाँत है। ये अजीब हैं, वर्षा में ये खिलते हैं, लेकिन ऋतु विशेष के उतने कायल नहीं हैं। पानी पड़ गया तो आज भी फूल सकते हैं। कवियों की दुनिया में जिसकी कभी चर्चा नहीं हुई, ऐसी एक घास है विष्णुकान्ता। हिन्दी भवन के आंगन में बहुत है।

(ख) प्रेमचन्दजी में गुण-ही-गुण विद्यमान हों, सो बात नहीं। दोष हैं, और-सम्भवत: अनेक दोष है। एक बार महात्माजी से किसी ने पूछा था, "आप किसी पर जुल्म भी करते हैं?" उन्होंने जवाब दिया, "यह सवाल आप बा (श्रीमती गान्धी) से पूछिए।" श्रीमती शिवरानी देवी से हम प्रार्थना करेंगे कि वे उनके दोषों पर प्रकाश डालें। एक बात तो उन्होंने हमे बतला भी दी कि "इनमे प्रबन्धशक्ति का बिलकुल अभाव है। हमीं-सी हैं, जो इनके घर का इन्तजाम कर सकती हैं।"

अथवा

भक्तिन मेरे आराम की चिन्ता के कारण ही दूसरों से झगड़ती है। पर जब उसे विश्वास हो जाता है कि अमुक व्यक्ति या कार्य से मुझे कष्ट पहुँचना सम्भव नहीं तब उसकी सारी प्रतिकूलता न जाने कहां गायब हो जाती है। भीड़ से मेरी शान्ति भंग हो

सकती हैं, इस सम्भावना ने उसे जो कठोरता दी थी वह उस सम्भावना के साथ ही विलीन हो गई। वह सत्तू रखने के सीके के नीचे ईंट-पत्थर का चूल्हा बनाकर कम से कम स्थान घेरने की चेष्टा करने लगी जिससे उन आक्रमणकारियों को सुख से बस जाने का अवकाश मिल सके।

(ग) वैष्णव जन वह है जो परदुख भंजक होता है। फिर भी निरभिमानी रहता है। गांधी जी से अधिक दूसरे के दु:ख-दर्द को समझने वाला कौन है। हम उन्हें राष्ट्रपिता कहते हैं। मानते हैं, उन्होंने देश को स्वाधीन कराया। परन्तु उनका लक्ष्य था मनुष्य के दु:ख-दर्द को दूर करना। स्वाधीनता तो उस लक्ष्य को पाने का साधन मात्र थी। उड़ीसा-प्रवास के समय वहाँ की दुर्दशा देखकर वे मर्माहत हो उठे थे।

अथवा

पुरुष : कोई भी चीज मन को उलझाती नहीं। उलझाती है, तो बस पाँच मिनट के लिए, दस मिनट के लिए, घंटे-भर के लिए। नहीं, घंटे भर के लिए कोई चीज मन को नहीं उलझाती...।

स्त्री : रोज दो-दो घंटे तो बात करते रहते हो, और कहते हो कि... ।

पुरुष : ...कोई चीज होल्ड नहीं करती। लगता है, कुछ होना था, नहीं हुआ। शायद कल होगा। पर वह कल होता ही नहीं। बात कुछ समझ में नहीं आती।

2. 'लोभ और प्रीति' निबंध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'वसंत आ गया है' निबंध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

3. संस्मरण के तत्वों के आधार पर 'ठकुरी बाबा' संस्मरण की समीक्षा कीजिए।

अथवा

'प्रेमचंद जी के साथ दो दिन' संस्मरण का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

4. 'वैष्णव जन' ध्वनिरूपक का सार बताते हुए आशय स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'शायद' बीज नाटक के कथ्य को स्पष्ट कीजिए। (15)

5. "'अंगद का पांव' व्यंग्य विधा का उत्तम उदाहरण है" कथन की पुष्टि सोदाहरण कीजिए।

अथवा

'ठेले पर हिमालय' यात्रा वृतांत की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए। (15)